

स्मृति देवबर्मा (मृत) कानूनी माध्यम से

प्रतिनिधि

वी.

प्रभा रंजन देबबर्मा और अन्य

(2009 की सिविल अपील सं. 878)

जनवरी 04, 2023

[संजीव खन्ना और जे. के. माहेश्वरी, जे. जे.]

मुक्रदमा-अधिकार की घोषणा के लिए मुक्रदमा-सबूत का बोझ-मुक्रदमा

अदालत ने यह मानते हुए मुकदमे का फैसला सुनाया कि वादी का अधिकार, अधिकार और अधिकार था।

विषय संपत्ति में ब्याज और खास कब्जे का हकदार था

उस वादी को आधार मानते हुए निचली अदालत के फैसले को उलट दिया अभिलेख पर रखे गए
साक्ष्य और दस्तावेज सक्षम नहीं थे

कानूनी स्वामित्व और स्वामित्व स्थापित करने के लिए सबूत के बोझ का निर्वहन

विषय संपत्ति के लिए-आयोजित: उच्च न्यायालय ने उचित रूप से खारिज कर दिया

निचली अदालत का फैसला और फरमान वादी ने लिया

विरोधाभासी स्थिति-मुकदमा दायर करने की तारीख को, वादी

संपत्ति के रचनात्मक या वास्तविक भौतिक कब्जे में नहीं था

- प्रतिवादी को तब तक बेदखल नहीं किया जा सकता जब तक कि वादी

संपत्ति पर एक बेहतर अधिकार और अधिकार स्थापित किया-बोझ वर्तमान मामले में एक अधिकार स्थापित करने के लिए सबूत का वादी पर निहित है

-एस. 101 साक्ष्य अधिनियम में कहा गया है कि तथ्य को साबित करने का बोझ

पार्टी के साथ रहता है जो काफी हद तक सकारात्मक और नहीं में दावा करता है उस पार्टी पर जो इसे अस्वीकार कर रही है-एस के संदर्भ में। 102 सबूतों से

अधिनियम, यदि दोनों पक्ष साक्ष्य प्रस्तुत करने में विफल रहते हैं, तो मुकदमा विफल होना चाहिए-ओनस

और कब्जा, वादी एक उच्च डिग्री बनाने में सक्षम रहा है प्रतिवादी पर जिम्मेदारी स्थानांतरित करने की संभावना-की कमजोरी

बचाव पक्ष मुकदमे का आदेश देने का औचित्य नहीं हो सकता-वादी

[2023] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

संपत्ति के संबंध में सफल हो सकती थी अगर उसने छुट्टी दे दी होती

उस संपत्ति के स्वामित्व को साबित करने का बोझ जो पूरी तरह से उस पर गिर गई थी उसका-यह एसएस का वास्तविक प्रभाव होगा। 101 और साक्ष्य के 102

अधिनियम-खारिज किए जाने योग्य वाद-साक्ष्य अधिनियम।

101 और 102।

" सबूत का बोझ "और" सबूत की जिम्मेदारी "

सबूत

चर्चा की।

याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा,

पकड़ना: 1 . वादी के सफल होने के लिए, उसे स्थापित करना होगा

नतीजतन, अधिकार की डिक्री का हकदार है। द. प्रतिवादियों को तब तक बेदखल नहीं किया जा सकता जब तक कि वादी ने

अनुसूची 'ए' पर एक बेहतर शीर्षक और अधिकार स्थापित किए

संपत्ति। अनुमानित चरित्र में भूमि का कब्जा रखने वाला व्यक्ति

सही मालिका कब्जे का फरमान पक्ष में पारित नहीं किया जा सकता है। वादी का इस आधार पर कि प्रतिवादी सं। 1 12 तक नहीं है

में अपने अधिकार, शीर्षक और रुचि को पूरी तरह से स्थापित करने में सक्षम थे

अनुसूची 'ए' संपत्ति। अभियुक्त, कब्जे में होने के कारण, अपने अधिकार की रक्षा करने और बचाने का हकदार होगा, जब तक कि

जो व्यक्ति उन्हें बेदखल करना चाहता है, उसके पास बेहतर कानूनी अधिकार है।

स्वामित्व या अधिकार का रूप [पैरा 30] [372]

एच; 373-ए-सी]

2. वर्तमान में एक शीर्षक स्थापित करने के लिए सबूत का बोझ

मामला वादी पर है क्योंकि यह बोझ उस पक्ष पर है जो

जिसमें से वह राहत का दावा करती है। यह धारा के संदर्भ में अनिवार्य है अधिनियम, जो बताता है कि साबित करने पर बोझ

101 साक्ष्य

तथ्य उस पक्ष पर निर्भर करता है जो सकारात्मक एस. एम. आर. आई. टी. आई. डी. बी. आर. एम. ए. (डी. ई. ए. डी.) थ्रू लेगल रिप्रेजेंटेटिव वी. में काफी जोर देता है।

प्रभरंजन देबबर्मा

और उस पार्टी पर नहीं जो इसे नकार रही है। यह नियम नहीं हो सकता है सार्वभौमिक और इसके अपवाद हैं, लेकिन की तथ्यात्मक पृष्ठभूमि में

वर्तमान मामले में, सामान्य सिद्धांत लागू होता है। संदर्भ में

साक्ष्य अधिनियम की धारा 102, यदि दोनों पक्ष प्रस्तुत करने में विफल रहते हैं

सबूत, मुकदमा विफल होना चाहिए। सबूत की जिम्मेदारी, इसमें कोई संदेह नहीं कि बदल जाती है और

प्रतिवादी पर जिम्मेदारी। इस तरह के साक्ष्य के अभाव में, सबूत का भार वादी पर होता है और उसे केवल आरोपमुक्त किया जा सकता है

जब वह खिताब साबित करने में सक्षम होता है। बचाव की कमजोरी नहीं हो सकती मुकदमा चलाने के लिए एक औचित्य हो। हो सकता है कि वादी

अनुसूची 'ए' संपत्ति के संबंध में सफल हुई यदि वह अनुसूची 'ए' में शीर्षक साबित करने के लिए बोझ का निर्वहन किया

संपत्ति जो पूरी तरह से उस पर आती है। यही वास्तविक प्रभाव होगा।

साक्ष्य अधिनियम के प्रावधानों के तहत, जिसमें विफल रहने पर मुकदमा बर्खास्त किया जा सकता है। [पैरा 31] [373-सी-ई; 374-ए-सी]

पूना राम बनाम। कानूनी माध्यम से मोती राम (मृत)

प्रतिनिधि और अन्य (2019) 11 एस. सी. सी. 309: [2019]

1 एससीआर 671; नायर सर्विस सोसाइटी लिमिटेड बनाम। रेव. पिता

के. सी. अलेक्जेंडर और अन्य, ए. आई. आर 1968 एस. सी. 1165: [1968]

3 एस. सी. आर. 163; अनिल ऋषि बनाम। गुरबख्श सिंह, (2006) 5 एससीसी 558 [2006] 1 पूरक। एससीआर 659;

आर. वी. ई. वेंकटचाला गौंडर वी. अरुलमिगु

एससीसी 752 [2003] 4 सप्लीमेंट। एस. सी. आर. 450; भारत संघ और अन्य वी। वासवी सहकारी आवास सोसायटी

लिमिटेड और अन्य (2014) 2 एस. सी. सी. 269: [2014] 1 एससीआर [2023] 1 एस. सी.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

180 और सेवेस्टियाओ लुइस फर्नांडीस (मृत) एल. आर. के माध्यम से।

और अन्य वी। के. वी. पी. शास्त्री (मृत) एल. आर. के माध्यम से। और

अन्य (2013) 15 एस. सी. सी. 161: [2013] 11 एससीआर 1076 -
पर भरोसा किया।

अड्डागडा राघवम्मा और एक अन्य वी। अडागाडा

चेनचम्मा और एक अन्य ए. आई. आर. 1964 एस. सी. 136: [1964]

2 एस. सी. आर. 933-संदर्भित।

मामला कानून संदर्भ

[2019] 1 एससीआर 671

उस पर भरोसा करें

पै

रा 30

[1968] 3 एससीआर 163

उस पर भरोसा करें

पै

रा 30

[2006] 1 पूरक। एससीआर 659

उस पर भरोसा करें

पै

रा 31

[1964] 2 एससीआर 933

पै

रा 31

संदर्भित किया गया है

[2003] 4 पूरक। एससीआर 450

उस पर भरोसा करें

पै

रा 31

[2014] 1 एससीआर 180

उस पर भरोसा करें

पै

रा 31

[2013] 11 एससीआर 1076

उस पर भरोसा करें

पै

रा 31

सिविल अपीलिय न्यायनिर्णय: सिविल अपील सं. 87

2009 .

उच्च न्यायालय के 17.05.2006 दिनांकित निर्णय और आदेश से

1997 के एफ. ए. No.40 में गुवाहाटी (अगरतला पीठ)।

रउफ रहीम, अली असगर रहीम, अधिवक्ता। अपीलार्थी के लिए।

केदार नाथ त्रिपाठी, डॉ. पी. वी. सरबनराजा, पी. वीरप्पन, एन.

कुमार वी., अधिवक्ता। उत्तरदाताओं के लिए।

श्रीमती देवबर्मा (मृत) कानूनी प्रतिनिधि वी. के माध्यम से। प्रभरंजन देवबर्मा

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था
संजीव खन्ना, जे।

स्मृति देवबर्मा ने एक वकील के रूप में और महारानी चंद्रतारा देवी की ओर से 1986 का शीर्षक मुकदमा संख्या 66 दायर किया था।

इस घोषणा के लिए प्रार्थना करना कि महारानी चंद्रतारा देवी 'खोश महल' के रूप में जानी जाने वाली संपत्ति की मालिक हैं, जिसका वर्णन अनुसूची 'ए' में किया गया है। मूल शिकायत, निम्नानुसार:

अनुसूची-ए।

पुराना दार ताशकिशी तालुक संख्या 178 (अब अगरतला टाउन शीट संख्या 3), खातियां संख्या 4882, दाग संख्या। 13142 , 13144 , 13176/26261 और 13144/51733, जिसे आमतौर पर "खोश महल" के रूप में जाना जाता है, इस भूमि के भीतर एक कानी पाँच गंडा दो करस, तीन क्रांता मापते हैं।

स्वर्गीय बिक्रमेंद्र किशोर देवबर्मा 1 और उनके कानूनी प्रतिनिधियों द्वारा वादी के लिए और उसकी ओर से, प्रतिवादी के रूप में शामिल किया गया नं. 1 दीवानी मुकदमे के लिए 7 तक, अवैध और अमान्य घोषित किया जाना चाहिए, और यह कि प्रतिवादियों और उनके एजेंटों को इससे रोका जाना चाहिए

अनुसूची 'ए' संपत्ति में प्रवेश करना, बेचना या अलग करना। इसके अलावा, वादी ने प्रार्थना की थी कि उसका अधिकार, अधिकार और हित हो।

अनुसूची 'बी' संपत्ति, अर्थात् मेसर्स के शेयर और व्यवसाय। होटल खोश महल लिमिटेड, अगरतला।

2. गवाहों के बयान की पोस्ट रिकॉर्डिंग, और कोर्ट सर्वेक्षक की रिपोर्ट दिनांक 20.01.1995, जिसे प्रदर्शन-1 के रूप में चिह्नित किया गया है, वाद

इसमें संशोधन किया गया और अनुसूची 'ए' में उल्लिखित भूमि को प्रतिस्थापित किया गया और इसे बढ़ाकर 2 कनी 8 गंडा 3 करास और 8 1/2 धुर कर दिया गया। अभियोग में अनुच्छेद 26 (ए) से 26 (डी) और अनुच्छेद 27 (ए) से 27 (सी) जोड़े गए। प्रार्थना खंड को सर्वेक्षण के लिए एक निर्देश शामिल करने के लिए संशोधित किया गया था और

प्रतिवादी संख्या के नाम पर खड़े अधिकारों के अभिलेख को हटाने/हटाने के लिए निपटान प्राधिकरण। 8 12 शून्य और निष्क्रिय के रूप में। निपटान और भूमि अभिलेख निदेशक को निर्देश जारी करने के लिए प्रार्थना

अनुसूची 'क' संपत्ति के लिए वादी के नाम पर अधिकारों का अभिलेख, और अनुसूची 'क' संपत्ति के वादी के कब्जे की पुष्टि करने के लिए बनाया गया था।

3. इससे पहले, प्रतिवादी सं। 8 12 को दिनांकित 15.09.1989 आदेश के अनुसार टाइटल सूट में प्रतिवादी के रूप में शामिल किया गया था। इन अभियुक्तों ने

1 उपनाम "बिदुरकार्ता"।

23] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

मेसर्स के प्रबंध निदेशक द्वारा निष्पादित बिक्री विलेखों के माध्यम से भूमि के खरीदे गए हिस्से। होटल खोश महल लिमिटेड। प्रतिवादी के पक्ष में बिक्री विलेख सं। 8 , प्रदर्शनी-ई के रूप में चिह्नित, दिनांक 17.07.1985, विचाराधीन मुकदमे की स्थापना से पहले है, जो 19.06.1986 पर दायर किया गया था।

4. महारानी चंद्रतारा देवी स्वर्गीय की छठी पत्नी थीं।

महाराजा बीरेंद्र किशोर देवबर्मा। वह अपने बच्चों से नहीं बची थी जो उससे पहले मर चुके थे। महारानी चंद्रतारा देवी ने गवाह चौकड़ी में प्रवेश नहीं किया और गवाह के रूप में गवाही दी। महाराणी चंद्रतारा देवी का 27.12.1988 पर मुकदमा दायर करने के तुरंत बाद निधन हो गया था।

5. स्मृति देवबर्मा को महारानी चंद्रतारा देवी के कानूनी प्रतिनिधि के रूप में वादी के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था, जिन्हें विरासत में मिली थी

महारानी चंद्रतारा देवी की वसीयत के संदर्भ में अनुसूची 'ए' संपत्ति और अन्य संपत्तियां, जिन्हें प्रदर्शनी-4 के रूप में चिह्नित किया गया है, दिनांक 15.10.1985। वसीयत की जांच नहीं की गई है, और प्रतिवादियों द्वारा निचली अदालत के समक्ष विवादित किया गया था। स्मृति देवबर्मा, वर्तमान अपील के लंबित रहने के दौरान समाप्त हो गई थीं और अब उनका प्रतिनिधित्व उनके कानूनी प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है।

सभी प्रतिवादियों को बेदखल करने के बाद अनुसूची 'ए' संपत्ति और सभी बाधाओं को दूर करने का हकदार था। इसके अलावा, किसी भी हस्तांतरण और/या हस्तांतरण स्वर्गीय बिदुरकार्ता और प्रतिवादी संख्या द्वारा बनाई गई अनुसूची 'ए' संपत्ति का कोई भी हिस्सा। 1 7 तक अवैध और अमान्य था। उप-पंजीयक, म्यूनिसिपल होलिंग्स आदि के कार्यालय के अभिलेखों में मेसर्स के नामों को हटाकर सुधार करने के निर्देश जारी किए गए। होटल खोश

महल लिमिटेड और/या प्रतिवादी संख्या। 8 12 तक, और यह कि वादी का नाम अनुसूची 'क' संपत्ति से संबंधित सभी अभिलेखों में दर्ज किया जाना चाहिए। प्रतिवादियों, उनके एजेंटों आदि को प्रवेश करने से रोक दिया गया था। अनुसूची 'क' संपत्ति में और उसी पर वादी के शांतिपूर्ण कब्जे में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी पैदा करना। सर्वेक्षण रिपोर्ट (प्रदर्शनी-1) को डिक्री का हिस्सा बनाने का निर्देश दिया गया था।

7. हालांकि, निचली अदालत ने मंजूरी नहीं दी और इसलिए, माना जाता है कि उसने वादी की याचिका को खारिज कर दिया है।

अनुसूची 'बी' संपत्ति। वादी ने डिक्री को चुनौती नहीं दी

2 निचली अदालत ने स्मृति देवबर्मा द्वारा प्रस्तावित वसीयत की वास्तविकता को स्वीकार कर लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि इस निष्कर्ष को गुवाहाटी उच्च न्यायालय के समक्ष दायर पहली अपील में चुनौती दी गई थी और अपील की अनुमति दी गई थी, हालांकि वसीयत की वास्तविकता के सवाल की जांच नहीं की गई है।

श्रीमती देवबर्मा (मृत) कानूनी प्रतिनिधि वी. के माध्यम से। प्रभा रंजन देवबर्मा [संजीव खन्ना, जे.]

निचली अदालत ने अनुसूची 'बी' संपत्ति के संबंध में उसके मुकदमे को खारिज कर दिया। इस हद तक निचली अदालत का फरमान अंतिम रूप ले चुका है। 8. प्रतिवादियों ने गुवाहाटी उच्च न्यायालय के समक्ष अनुसूची 'ए' संपत्ति के संबंध में डिक्री के खिलाफ अपील को प्राथमिकता दी, जिसे दिनांक 17.05.2006 के विवादित फैसले द्वारा अनुमति दी गई है। उलटफेर के इस फैसले में अन्य बातों के साथ-साथ यह माना गया है कि वादी साक्ष्य और रिकॉर्ड पर रखे गए दस्तावेजों के आधार पर बोझ का निर्वहन करने में सक्षम नहीं है

अनुसूची 'ए' संपत्ति के लिए कानूनी स्वामित्व और अधिकार स्थापित करने के लिए प्रमाण।

हम बाद में उच्च न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए साक्ष्य और कारणों के बारे में विस्तार से बताएंगे। निर्णय में त्रिपुरा भूमि राजस्व और भूमि सुधार अधिनियम का भी उल्लेख किया गया है जो 1960 में लागू हुआ था और कहा गया है कि अनुसूची 'ए' संपत्ति के संबंध में राज्य सरकार को कुछ अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। हालांकि उच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया

कि प्रतिवादियों के अधिकार, अधिकार और हित से संबंधित प्रश्न को संशोधित किया जाना बाकी है, और प्रतिवादी संपर्क कर सकते हैं

उपयुक्त मंच।

9. अब हम वाद में किए गए कथनों की जांच करने के लिए आगे बढ़ेंगे, जिसमें वाद और पक्षकारों के नेतृत्व में साक्ष्य शामिल हैं।

10. पी. डब्ल्यू.-1 के रूप में अपदस्थ स्मृति देवबर्मा द्वारा की गई शिकायत और दावा पट्टा के विलेख पर आधारित है, जिसे प्रदर्शनी के रूप में चिह्नित किया गया है।

12, महाराजा बीरेंद्र किशोर देवबर्मा के पुत्र महाराजा दुर्जय किशोर देवबर्मा ने 31.10.1951 पर विदुरकार्ता के पक्ष में फांसी दी। इसके बाद, विदुरकार्ता ने 25.06.1952 पर एक एकर्णमा निष्पादित किया था,

प्रदर्शनी-5 के रूप में चिह्नित, यह स्वीकार करते हुए कि पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) के तहत उन्हें दिए गए अधिकार वास्तव में महारानी चंद्रतारा देवी के हैं। इस हद तक कोई विवाद नहीं है।

11. शिकायत में उल्लेख किया गया है और यह स्वीकार किया गया है कि महाराजा बीर बिक्रम किशोर देवबर्मा द्वारा निष्पादित एक चार्टर में एक निजी लिमिटेड को शामिल किया गया था।

कंपनी, 24.01.1951 त्रिपुरा युग 3 या 1941 ईस्वी पर, अर्थात्, मेसर्स। होटल खोश महल लिमिटेड। इसके अलावा, एम/एस। होटल खोश महल लिमिटेड ने अपने निगमन के बाद अगरतला शहर में बड़ी संपत्तियों का अधिग्रहण किया था। वादी का दावा है कि वह इस कंपनी के प्रमुख शेयरधारकों में से एक है। हालांकि, यह दिखाने के लिए रिकॉर्ड पर कोई सबूत या सामग्री नहीं है कि

मेसर्स में महारानी चंद्रतारा देवी की हिस्सेदारी। होटल खोश महल लिमिटेड। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, मेसर्स के शेयरों और व्यवसाय के संबंध में एक डिक्री के लिए वादी की प्रार्थना। होटल खोश महल लिमिटेड को अस्वीकार कर दिया गया था। 3 संक्षेप में, "टी. ई"।

23] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

विचारण न्यायालय द्वारा, जिसे वादी द्वारा चुनौती नहीं दी जाती है

और स्वीकार कर लिया गया है। अभियोग के पैराग्राफ 7 में कहा गया है कि एम/एस। होटल खोश महल लिमिटेड की स्थापना अनुसूची 'ए' संपत्ति की भूमि और भवन लेने के बाद की गई थी, जिसे महारानी चंद्रतारा देवी ने पट्टे पर दिया था। पट्टा बहुत पहले समाप्त हो गया था। निष्पादन की तारीख और पट्टे की अवधि का संकेत नहीं दिया गया है। कोई पट्टा विलेख या समर्पण दस्तावेज रिकॉर्ड पर नहीं रखा गया और साबित नहीं किया गया। फिर भी, हम दर्ज करेंगे कि शिकायत स्वीकार करती है कि मेसर्स। होटल खोश महल लिमिटेड अनुसूची 'ए' संपत्ति के कब्जे में था।

12. महारानी चंद्रतारा देवी ने बिदुरकार्ता को अपना वकील नियुक्त किया था, जिसे उनके द्वारा 29.10.1969 पर निष्पादित किया गया था।

उनके अस्वस्थ स्वास्थ्य, वृद्धावस्था और धार्मिक मानसिकता के कारण, और क्योंकि वे मुख्य रूप से वाराणसी, हरिद्वार और/या देहरादून में रहती थीं। बाद में, उन्होंने 06.03.1970 पर इस पावर ऑफ अटॉर्नी को रद्द कर दिया और 1972 में बिदुरकार्ता द्वारा 12.01.1970 पर निष्पादित पंजीकृत उपहार विलेख को रद्द करने के लिए एक दीवानी मुकदमा शुरू किया, जिसमें उन्होंने 'रूपचाया' सिनेमा हॉल व्यवसाय का अपना एक तिहाई हिस्सा कर्णकिशोर देवबर्मा और सहदेव किशोर देवबर्मा को हस्तांतरित किया। मुकदमा 17.06.1983 पर तय किया गया था, और उपहार विलेख रद्द कर दिया गया था। इस पैराग्राफ में बताए गए तथ्यों को वादी द्वारा स्थापित और साबित किया गया है।

13. शिकायत में कहा गया है कि मेसर्स का होटल व्यवसाय। होटल खोश महल लिमिटेड भारी नुकसान और कुप्रबंधन के कारण बंद हो गया था।

इसके बाद, भूमि और भवन मेसर्स को दिया गया। इंडियन एयरलाइंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड। बिदुरकार्ता किरायेदार से प्राप्त किराया महारानी चंद्रतारा देवी को भेजता था। हालांकि, के पारित होने के साथ

समय के साथ, प्रेषण बहुत कम हो गए, और वे अंततः बंद हो गए। बिदुरकार्ता ने प्रतिवादियों के साथ मिलकर अनुसूची 'ए' संपत्ति और अनुसूची 'बी' व्यवसाय को अपनी पत्नी प्रतिवादी नं. 1- ज्योति देवबर्मा। प्रतिवादी नं. 2- प्रभा रंजन देवबर्मा, के पुत्र

बिदुरकार्ता, एक आई. ए. एस. अधिकारी और एक केंद्र सरकार के कर्मचारी,

मेसर्स से मासिक किराया एकत्र करें। इंडियन एयरलाइंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड, हालांकि उनका अनुसूची 'ए' संपत्ति से कोई संबंध नहीं था।

14. संशोधन के बाद शिकायत में दावा किया गया था कि मेसर्स. भारतीय

एयरलाइंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने 30.06.1986 पर संपत्ति खाली कर दी थी। इसके बाद, वादी ने अपने कर्मचारियों और एजेंटों के माध्यम से अनुसूची 'ए' संपत्ति पर कब्जा कर लिया था और 'मेसर्स' के नाम और शैली के तहत एक अतिथि गृह शुरू किया था। स्टार गेस्ट हाउस '।

हालांकि, मुकदमे के रूप में श्रीमती देवबर्मा (मृत) कानूनी प्रतिनिधि के माध्यम से V. प्रभा रंजन देवबर्मा [संजीव खन्ना, जे.]

वादी और अनुसूची 'ए' संपत्ति का कब्जा ले लिया। वादी ने दंड संहिता की धारा 144 के तहत कार्यवाही शुरू की थी प्रक्रिया, 1973, उप-मंडल मजिस्ट्रेट, अगरतला की अदालत में विविध सं. 75/86 के माध्यम से, जिसके तहत प्रतिवादियों को वादी के कब्जे को बाधित करने से रोक दिया गया था। हालांकि, उप-मंडल मजिस्ट्रेट, अगरतला द्वारा पारित 26.08.1986 दिनांकित आदेश के अनुसार, एक पुलिस अधिकारी

अधिकारी को प्राप्तकर्ता के रूप में नियुक्त किया गया। उप-मंडल मजिस्ट्रेट, अगरतला की यह कार्यवाही, यह तर्क दिया जाता है, अवैध और अनुचित है क्योंकि वादी ने पहले ही विचाराधीन मुकदमा दायर कर दिया था। 15. प्रतिवादी सं। 1 7 तक ने अपने लिखित बयान में पट्टा के विलेख पर भरोसा किया था, जिसे प्रदर्शनी-ए के रूप में चिह्नित किया गया था, जिसे महाराजा दुर्जय किशोर देवबर्मा ने 11.10.1358 T. E. या 1948 ईस्वी में मेसर्स के पक्ष में निष्पादित किया था। होटल खोश महल लिमिटेड, जिसके द्वारा 3 कानी 8 गंडा 3 करास और 16 प्रतिशत धुर वाली भूमि 1349 से 1369 या 1939 से 1959 ईस्वी तक बीस साल की अवधि के लिए पट्टे पर दी गई थी।

हम बाद में पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-ए) का उल्लेख करेंगे और इस न्यायालय के समक्ष वादी द्वारा इस दस्तावेज की वास्तविकता को चुनौती देने की भी जांच करेंगे। इस दस्तावेज पर भरोसा करते हुए, लिखित बयान में कहा गया है कि अनुसूची 'ए' संपत्ति मेसर्स के स्वामित्व में है। होटल खोश महल लिमिटेड। दिनांक 25.03.1953 के एक समझौते के अनुसार, मेसर्स के प्रबंध निदेशक के रूप में बिदुरकार्ता। होटल खोश महल लिमिटेड ने महारानी चंद्रतारा देवी को व्यवसाय/संपत्ति पट्टे पर दी थी। यह पट्टा अगस्त में समाप्त कर दिया गया था। 1968 और उसके बाद एक नए समझौते द्वारा, व्यवसाय प्रतिवादी नं. 2 - प्रभा रंजन देवबर्मा, बिदुरकार्ता के पुत्र। एम/एस। इंडियन एयरलाइंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने प्रतिवादी नं. 2. बोर्ड के प्रस्तावों आदि सहित इन पट्टा विलेखों को रिकॉर्ड में नहीं रखा जाता है और साबित नहीं किया जाता है। तथ्य यह है कि 1968 के बाद से मेसर्स इंडियन एयरलाइंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा प्रतिवादी नं. 2 वादी-अपीलार्थी द्वारा स्वीकार किया जाता है।

भूमि से अलग, जो पट्टा विलेख का विषय है (प्रदर्शनी-12), और जो एकर्णमा (प्रदर्शनी-5) के अनुसार महारानी चंद्रतारा देवी के स्वामित्व में है।

" 1986 के टाइटल सूट नंबर 66 को दिनांक 28.04.1988 के आदेश के अनुसार डिफॉल्ट रूप से खारिज कर दिया गया था। मिस्क में एक बहाली याचिका। 1986 के स्वामित्व वाद सं. 66 के लिए 88 का मामला सं. 69 वादी द्वारा दायर किया गया था और 1986 के स्वामित्व वाद सं. 66 को दिनांक 1 के आदेश के माध्यम से पुनर्स्थापित किया गया था, जिसने विविध का भी निपटारा किया। 88 का मामला सं. 69।

23] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

17. प्रतिवादी नं. 8 उन्होंने एक अलग लिखित बयान दायर किया था और स्वीकार किया था कि उन्होंने पंजीकृत बिक्री विलेख के माध्यम से भूमि का अधिग्रहण किया था मेसर्स के प्रबंध निदेशक से दिनांक 17.07.1985, (प्रदर्शनी-E)। होटल खोश महल लिमिटेड। प्रतिवादी नं. 8 इसके बाद एक का निर्माण किया था

वादी की सूचना और जानकारी के लिए निर्माण। उस समय वादी ने न तो कोई आपत्ति जताई थी और न ही खरीदी गई भूमि पर अधिकार, स्वामित्व या ब्याज का दावा किया था। प्रतिवादी नं. 8 सर्वेक्षण और निपटान कार्यालय में खतियां संख्या 30912 के माध्यम से अपना नाम परिवर्तित कराया था, जिसे प्रदर्शनी-एफ के रूप में चिह्नित किया गया था, दिनांक 16.05.1989। प्रतिवादी नं. 8 खरीदी गई संपत्ति के कब्जे में रहा है।

18. प्रतिवादी नं. 9 11 ने इसी तरह प्रस्तुत किया था कि वादी का अनुसूची 'ए' संपत्ति पर कोई अधिकार, स्वामित्व और हित नहीं था। उन्होंने खरीद/बिक्री विलेख के बल पर अनुसूची 'ए' संपत्ति के कुछ हिस्सों पर अधिकार, स्वामित्व और ब्याज हासिल कर लिया था। मेसर्स के प्रबंध निदेशक। होटल खोश महल लिमिटेड। इसके अलावा, उन्होंने सरकार से अपने पक्ष में भूमि के अधिकारों का रिकॉर्ड प्रकाशित कराया था। प्रतिवादी नं. 11 अपने अतिरिक्त लिखित बयान में दावा किया गया था कि वह खरीद के माध्यम से कब्जे या मालिक में नहीं था

वादपत्र की अनुसूची 'क' या वसीयत (प्रदर्शनी-4) में उल्लिखित अनुसूची में शामिल कोई भी भूमि। प्रतिवादी नं. 11'उसकी पत्नी ने प्रतिवादी नं. 1 , लेकिन यह भूमि शिकायत या वसीयत (प्रदर्शनी-4) की अनुसूची 'ए' में उल्लिखित किसी भी भूखंड के अंतर्गत नहीं आती है। प्रतिवादी सं। 9 11 ने वसीयत की वास्तविकता पर सवाल उठाया था (प्रदर्शनी-4)।

19. उपरोक्त वर्णन से पता चलता है कि अनिवार्य रूप से दो परस्पर जुड़े मुद्दे हैं जो विचार के लिए उत्पन्न होते हैं। पहला पहलू

पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकरनामा (प्रदर्शनी-5) के माध्यम से पट्टे पर दी गई भूमि के सीमांकन से संबंधित है, जिसके आधार पर स्मृति देबबर्मा द्वारा वकील के रूप में और महारानी चंद्रतारा देवी की ओर से मालिकाना हक का मुकदमा दायर किया गया था। दूसरा मुद्दा सबूत के बोझ से संबंधित है और क्या वादी स्वामित्व की एक घोषणात्मक डिक्री और अनुसूची 'ए' संपत्ति के कब्जे के अपने अधिकार के लिए अपना अधिकार स्थापित करके बोझ का निर्वहन करने में सफल रही है। 20. हमारी राय में विवादित निर्णय ने अनुसूची 'ए' संपत्ति के सीमांकन और पहचान के पहलू की सही जांच की है।

अर्थात्। पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकरनामा (प्रदर्शनी-5) में उल्लिखित भूमि की पहचान और अभिलेख पर साक्ष्य और सामग्री पर विचार करने पर यह अभिनिर्धारित किया गया कि वादी आई. टी. आई. देबबर्मा (मृत) को कानूनी प्रतिनिधित्व के माध्यम से स्थापित करने में सक्षम नहीं हुआ है।

प्रभा रंजन देबबर्मा [संजीव खन्ना, जे.] अनुसूची 'ए' संपत्ति पर स्वामित्व और स्वामित्व। हम उल्लेख करेंगे
इस संबंध में उच्च न्यायालय द्वारा दिया गया तर्क और कुछ जोड़ें
हमारे अपने एनएस।

21. सबसे पहले, पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) दिनांक 31.10.1951 और
क्रममा (प्रदर्शनी-5) दिनांक 25.06.1952, सीमांकन करें और देखें
रोपटी निम्नानुसार है:

पट्टा का विलेख

XX

XX

XX

(अनुसूची सीमाएँ)

शीट नं. 3 , नूतन हवेली शहर, पीजी, अगरतला के भीतर स्थित
हुआ है

उत्तर में मोगरा रोड से घिरा

महाराजगंज बाजार जाने के लिए मार्ग के पूर्व में
सीमा के भीतर एक कानी मापने वाली 246 1 X 90 फीट भूमि है।

इस

पाँच गंडा दो कर दो क्रांता दस धुर, भाग से संबंधित

दाग नं. का चिह्नित (घ)। 3412. "

XX

XX

XX

एकरणमा

XX

XX

XX

(अनुसूची संपत्ति)

मैं, श्री बिक्रमेंद्र किशोर देब बर्मा के नाम पर

वार्षिक समारोह में ताशखिशी दार तालुक की उपाधि के साथ 'बंदोबस्त' दिया जाता है। रु. की
आय। 100 / - (एक सौ रुपये) 1 मापने वाली भूमि

तालुक शीर्षक सं। 178 महाराज के नाम पर सदर कलेक्टोरेट कुमार श्रीलो श्रीजुतो दुर्जय किशोर
देव बर्मा, एक वार्षिक समारोह में

रुपये की जमा राशि। 30 , नूतन हवेली टाउन शीट नं। 3 के तहत उप-रजिस्ट्री अगरतला पी.
जी. और पी. एस. अगरतला।

23] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उत्तरी मोगरा रोड पर सीमा

पश्चिम और दक्षिण में खास पतित द्वारा,
पूर्व में महाराजगंज बाजार के मार्ग से।

इस सीमा के भीतर 1 कानी 5 गंडा 2 करा 2 क्रांता 10 धुर है।

2061 x 90 फीट मापने वाली भूमि, दाग के चिह्नित (खा) हिस्से में नहीं। 3412. यह कहा जाए कि संपत्ति का मूल्य रु। 2500 (रुपया

केवल दो हजार पाँच सौ)

XX "

XX

XX

उपरोक्त विवरण किसी भी निर्मित भवन का उल्लेख नहीं करता है।

और विशेष रूप से होटल खोश महल। यदि पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकर्णमा (प्रदर्शनी-5) उस संपत्ति से संबंधित थे जहाँ होटल खोश महल का निर्माण किया गया था, तो यह सामान्य और स्वाभाविक है कि इस स्थिति का विशेष रूप से संकेत और उल्लेख किया गया होगा।

22. दूसरा, निचली अदालत ने एक सर्वेक्षक नियुक्त किया था, जिसने

पार्टियों की उपस्थिति में 18.12.1994 पर किए गए स्थल निरीक्षण के आधार पर प्रदर्शनी-1 दिनांकित 20.01.1995 चिह्नित उनकी रिपोर्ट दी गई। रिपोर्ट के प्रासंगिक भाग में कहा गया है:

XX

XX

XX

सी. एस. प्लॉट सं. के तहत चिह्नित भूमि का क्षेत्र। 13142 , 13143 ,

13144 , 13145 , 26261 इसका अर्थ है 2 केनी 8 गांडा 3 करास 8 1/2

केवल धुर जबकि उक्त "एकर्णमा" में भूमि का क्षेत्र

इसका उल्लेख केवल 1 कानी 5 गंडस 2 करस 2 क्रांति के रूप में किया गया था।
डेफ्ट की प्रदर्शनी "ए" में। अर्थात् रेग्ड "। में बनाया गया पट्टा

वर्ष 1948 में 3 कानियों 8 गांडा 16 1/2 धुर मापने वाली भूमि के लिए

केवल तत्कालीन सी. एस. प्लॉट संख्या 3424/पी, 2863/पी, 2661/पी, 3426 के
तहत, 2662 / पी,
2663 का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

उत्तर दिशा: - 'स्मृति मंदिर' के दक्षिणी भाग में परती खास भूमि।

पूरब: - सेंट्रल रोड।

दक्षिण: - कुमार महेन्द्र मोहन के घर की अग्रिम भूमि

देब बर्मा।

पश्चिम: -कुमार महेन्द्र मोहन देब की उत्तर की ओर की भूमि
बर्मा।

श्रीमती देबबर्मा (मृत) कानूनी प्रतिनिधि वी. के माध्यम से। प्रभा रंजन देबबर्मा [संजीव खन्ना, जे.]

चिह्नित की गई उत्तर और पूर्व सीमा में समानता है।
डेफ्ट की प्रदर्शनी "ए" में वर्णित सूटलैंड और/भूमि। द.

"स्मृति मंदिर" का खंडहर एक या दो भूखंडों के बाद पाया जाता है।

चिह्नित भूमि का उत्तरी भाग। केंद्रीय आर. डी. में पाया जाता है
सूट भूमि का पूर्वी भाग अर्थात् सी. एस. प्लॉट सं. 13142। द.

प्रदर्शनी "ए" में वर्णित दक्षिण और पश्चिम सीमाएँ

डेफडिट। और सूट भूमि की वर्तमान सीमाएँ मेल नहीं खाती हैं,

अभिलेख अधिकार और भूमि के आकार में कुल परिवर्तन हो सकता है।

1948 से इतने वर्षों के अंतराल में।

यह कृपया ध्यान दिया जा सकता है कि न तो डेफ्ट। न ही पी. एल. टी. टी. एफ. थे।

तत्कालीन सी. एस. के नक्शे की कोई भी प्रमाणित प्रति प्रस्तुत करने में सक्षम।

"एकर्णमा" प्रदर्शनी संख्या 5 में वर्णित कथानक संख्या 3412 (पी) या

फिर सी. एस. प्लॉट संख्या। 3424 / पी, 2868/पी, 2661/पी, 3426/पी 2663

मानचित्रों की ऐसी प्रमाणित प्रति के अभाव में और में अंतर
वर्ष में बनाए गए "एकर्णमा" में भूमि की सीमाओं का वर्णन किया गया है

1952 यह इंगित करना संभव नहीं है कि द्वारा चिह्नित भूमि

वादी "एकर्णमा" द्वारा आच्छादित भूमि है अर्थात् 5 का प्रदर्शन संख्या
पीएलटीएफ।

हालांकि, में वर्णित भूमि के क्षेत्र की लगभग समानता है

" वर्तमान सी. एस. प्लॉट के तहत वादी और भूमि का एकरनामा

" एकर्णमा "1 कानी 5 गांडा 2 करस 2 क्रांति के लिए बनाया गया था।
केवल।

XX "

XX

XX

निचली अदालत ने, हमारी राय में, गलत निर्णय दिया है कि सर्वेक्षण

रिपोर्ट (प्रदर्शनी-1) वादी के मामले का समर्थन करती है और उसे स्वीकार करती है। उक्त निष्कर्ष तथ्यात्मक रूप से गलत था। उच्च न्यायालय ने ठीक ही अभिनिर्धारित किया है कि सर्वेक्षण रिपोर्ट (प्रदर्शनी-1) वादी की याचिका और तर्क के खिलाफ है। ऊपर उद्धृत सर्वेक्षण रिपोर्ट (प्रदर्शनी-1) के अनुसार, अनुसूची 'ए' संपत्ति का विवरण, जहां होटल खुश महल स्थित है, पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकर्णमा (प्रदर्शनी-5) की अनुसूची में दिए गए विवरण से अलग है। पट्टा में भूमि का विवरण और पहचान (प्रदर्शनी-ए) मेसर्स के पक्ष में। होटल खुश महल लिमिटेड इस प्रकार है:

23] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

पाटा

(11-10-1358 T. E. पर निष्पादित)

(= 1948 ए. डी)

XX

XX

XX

के क्षेत्र के भीतर तकशी तालुक के पाटा का यह विलेख

सदर उप रजिस्ट्री और पुलिस-स्टेशन के तहत स्वतंत्र त्रिपुरा

अगरतला नूतन हवेली शहर से संबंधित, भूमि माप 3
कानी 8 गंडस 3 करस 16 1/2 धुर, 8 क्यूबिट लंबाई में मापा गया

' नल '(चेन) = 12 x 10 (नल) को होटल के पक्ष में निष्पादित किया जाता है।

20 (बीस) वर्षों के लिए पट्टे पर सीमित खोश महल

1349 से 1369 तक

XX

XX

XX

भूमि का विवरण

नटुन हवेली शहर में स्थित भूमि, निम्नानुसार घिरी हुई है:

उत्तर में-स्मृति के दक्षिण में 'खास भूमि'-मंदिर।

ईस्ट-सेंट्रल रोड में

कुमार महेन्द्र के निवास के दक्षिण-सामने वाले हिस्से में

मोहन देव बर्मा बहादुर

कुमार के उक्त निवास के पश्चिम-उत्तरी भाग में

महेंद्र मोहन देवबर्मा बहादुर

उपर्युक्त सीमा के भीतर

प्लॉट: - 2846 (पी), 2668 (पी), 3423 (पी), 3424 (पी), 2863 (पी)

2661 (पी), 3426,2662,2663।

XX "

XX

XX

23. तीसरा, सर्वेक्षण रिपोर्ट (प्रदर्शनी-I) प्रस्तुत करने के बाद,

1995 में वादी ने वाद में संशोधन किया था और संशोधन के बाद, अनुसूची 'ए' में उल्लिखित माप को 1 कानी 5 गंडस 2 करस, 3 क्रांति और 10 धुर से बढ़ाकर 2 कनीस 8 गंडस 3 करस और 8 1/2 धुर कर दिया था। इस संशोधन के परिणामस्वरूप, अब अनुसूची 'ए' में दर्ज किए गए आंकड़े पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-ए) में उल्लिखित मापों के अनुरूप थे, जिसे पट्टा 1948 में मेसर्स के पक्ष में निष्पादित किया गया था। होटल खोश महल लिमिटेड।

[illegible]

विवादित निर्णय ने इस विसंगति की अनदेखी करते हुए कहा कि भूमि की मात्रा कोई मायने नहीं रखती क्योंकि मूल विवाद यह है कि क्या अनुसूची 'ए' की संपत्ति वादी की थी या मेसर्स की। होटल खोश महल लिमिटेड। ट्रायल कोर्ट ने इसके समर्थन में कहा कि पहले की भूमि को आंखों के आकलन से मापा जाता था और वास्तविक कब्जे में भूमि की मात्रा हमेशा दस्तावेज़ में लिखी गई मात्रा से अधिक होगी। 1960 में त्रिपुरा में वैज्ञानिक सर्वेक्षण शुरू हुआ। इस तर्क को इस तथ्य के आलोक में स्वीकार करना मुश्किल है कि पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-ए) भूमि के माप और सीमांकन को संदर्भित करता है जो स्थान के साथ-साथ सर्वेक्षण रिपोर्ट (प्रदर्शनी-1) में उल्लिखित भूमि के कुल माप दोनों के दृष्टिकोण से बहुत अलग है। निचली अदालत द्वारा की गई धारणा गलत और त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि विचाराधीन दस्तावेज़, यानी पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-ए), समय की दृष्टि से पहले का है, जबकि पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकरनामा (प्रदर्शनी-5) को बाद में निष्पादित किया गया था। अभिलिखित क्षेत्र में अंतर पर्याप्त है। पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकरणमा (प्रदर्शनी-5) में क्षेत्र को ठीक करने के लिए किसी भी समय कोई शुद्धिपत्र नहीं बनाया गया था।

24. चौथा, महारानी चंद्रतारा देवी द्वारा निष्पादित और स्मृति देवबर्म द्वारा भरोसा किए गए पावर ऑफ अटॉर्नी ने विचाराधीन भूमि की समान रूप से पहचान की थी, वह भूमि जो उनकी थी, निम्नानुसार:

अनुसूची-'बी'।

अगरतला दाग नं. 3412-क्षेत्र-2061 x 901 शहर में पश्चिम त्रिपुरा जिले, पी. एस. पश्चिम अगरतला से संबंधित भवन और "खोश महल" के रूप में जानी जाने वाली भूमि-1 (एक) कानी 5

(पाँच) गांडा 2 (दो) करस, 2 (दो) क्रांति 10 (दस) धुर;

पूर्ववर्ती होटल खोश महल अब मेसर्स। इंडियन एयरलाइंस
निगम, अगरतला कार्यालय, देर से दर्ज की गई भूमि

महारानी के बेनामदार के रूप में बिक्रमेन्द्र किशोर देब बर्मा

चंद्रतारा देवी (प्राचार्य) "।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि महारानी चंद्रतारा देवी द्वारा कथित रूप से निष्पादित पावर ऑफ अटॉर्नी में अनुसूची 'बी' 'खोश महल' को संदर्भित करती है, लेकिन इस क्षेत्र में

दिया गया माप बहुत अलग है। पावर ऑफ अटॉर्नी में उल्लिखित क्षेत्र और स्थान पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकर्णमा (प्रदर्शनी) में उल्लिखित क्षेत्र और स्थान से मेल खाते हैं।

5) . इस प्रकार यह तर्क कि पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) और एकर्णमा (प्रदर्शनी-5) में क्षेत्र और स्थान का गलत उल्लेख किया गया था, एक [2023] 1 एस. सी. आर. है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

बाद में विचार किया गया और सर्वेक्षण रिपोर्ट (प्रदर्शनी-1) में उजागर विसंगतियों के रिकॉर्ड में आने के बाद उक्त रुख अपनाया गया।

25. अपीलार्थी-वादी की ओर से उपस्थित विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया था कि पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-ए) एक मनगढ़ंत दस्तावेज है। समर्थन में, उन्होंने इस दस्तावेज़ की सामग्री का उल्लेख किया और विशेष रूप से, हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया गया कि मेसर्स को पट्टे पर दिया गया था। होटल खोश महल लिमिटेड 1349 ई. से बीस साल की अवधि के लिए था।

1369 टी. ई. या 1939 ए. डी. से 1959 ए. डी. तक इस बात पर प्रकाश डाला गया कि पट्टा विलेख (प्रदर्शनी ए) 1351 टी. ई. या 1941 ए. डी. को उस वर्ष के रूप में संदर्भित करता है जब एम/एस. होटल खोश महल लिमिटेड की स्थापना की गई थी। हम महसूस करते हैं कि अपीलार्थी-वादी को अनुमति नहीं दी जानी चाहिए और इस याचिका को उठाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, क्योंकि यह तर्क निचली अदालत या उच्च न्यायालय के समक्ष नहीं उठाया गया था। पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-ए) एक पंजीकृत दस्तावेज/साधन है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 906 के संदर्भ में दस्तावेज़ को तीस साल से अधिक पुराना माना जाता है। इसके अलावा, वादी ने मेसर्स को शामिल नहीं किया था। सिविल मुकदमे में एक पक्ष के रूप में होटल खोश महल लिमिटेड।

' हमने इन तिथियों को पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-ए) की अनुवादित प्रति से लिया है, यह मानते हुए कि वे सही हैं।

6 धारा 90: तीस साल पुराने दस्तावेज़ों के बारे में अनुमान। - जहां तीस वर्ष पुराना होने का तात्पर्य रखने वाला या साबित होने वाला कोई दस्तावेज किसी ऐसी अभिरक्षा से प्रस्तुत किया जाता है जिसे न्यायालय विशेष मामले में उचित समझता है, वहां न्यायालय यह मान सकता है कि हस्ताक्षर और ऐसे दस्तावेज का हर दूसरा हिस्सा, जो किसी विशेष व्यक्ति की लिखावट में होने का तात्पर्य रखता है, उस व्यक्ति की लिखावट में है, और निष्पादित या सत्यापित दस्तावेज़ के मामले में, यह उन व्यक्तियों द्वारा विधिवत निष्पादित और सत्यापित किया गया था जिनके द्वारा इसे निष्पादित और सत्यापित किया जाना है।

स्पष्टीकरण। - दस्तावेज़ों को उचित अभिरक्षा में कहा जाता है यदि वे उस स्थान पर हैं, और उस व्यक्ति की देखभाल में हैं जिसके साथ वे स्वाभाविक रूप से होंगे; लेकिन कोई अभिरक्षा अनुचित नहीं है यदि यह साबित हो जाता है कि इसका मूल वैध था, या यदि विशेष मामले की परिस्थितियाँ ऐसी हैं जो इस तरह के मूल को संभावित बनाती हैं।

यह स्पष्टीकरण धारा 81 पर भी लागू होता है। संक्षेप में, "साक्ष्य अधिनियम"।

श्रीमती देबबर्मा (मृत) कानूनी प्रतिनिधि वी. के माध्यम से। प्रभा रंजन देबबर्मा [संजीव खन्ना, जे.]

एक ही। हालाँकि, यह भी रिकॉर्ड की बात है कि एम/एस। होटल खोश महल लिमिटेड को इसके मालिक और मालिक के रूप में दर्ज किया गया है। 1974 की प्रविष्टि के माध्यम से राजस्व अभिलेखों में 'ए' संपत्ति को अनुसूची करें, जिसे प्रदर्शनी-15 के रूप में चिह्नित किया गया है। राजस्व प्रविष्टियों को केवल वादी द्वारा चुनौती दी गई थी

वर्ष 1994 में 1994 के राजस्व मामले संख्या 4 में। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, महारानी चंद्रतारा देवी ने 1972 में बिदुरकार्ता द्वारा निष्पादित उपहार विलेखों को रद्द करने के लिए बिदुरकार्ता के पक्ष में पावर ऑफ अटॉर्नी को रद्द करने के बाद एक दीवानी मुकदमा दायर किया था। इस तथ्य को देखते हुए कि उन्हें बिदुरकार्ता के इरादे और कार्यों पर संदेह था, उन्हें पता होता और उन्हें अनुसूची 'ए' संपत्ति के संबंध में अपना दावा करना चाहिए था, विशेष रूप से तब जब उन्हें 1968 से कोई किराया नहीं दिया जा रहा था। वर्तमान दीवानी मुकदमा दायर करने में 18 वर्षों के अंतराल को अपीलार्थी-वादी द्वारा समझाया नहीं गया है।

27. वादी ने बिदुरकार्ता के पुत्र किशालय किशोर देबबर्मा के बयान पर भरोसा किया है, जिन्होंने डी. डब्ल्यू.-1 के रूप में अपदस्थ किया था और मेसर्स से प्राप्त उस किराए को स्वीकार किया था। इंडियन एयरलाइंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड को 1968 तक महारानी चंद्रतारा देवी को भुगतान किया गया था। यह सही है और प्रतिवादी संख्या द्वारा स्वीकार किया गया है। 17 तक। इन प्रतिवादियों ने कहा है कि 1953 में अनुसूची 'ए' संपत्ति मेसर्स द्वारा पट्टे पर दी गई थी। महारानी चंद्रतारा देवी को होटल खोश महल लिमिटेड, जिसका पट्टा 1968 तक बढ़ा दिया गया था। प्रतिवादियों ने इस तथ्य को किसी भी दस्तावेज या पट्टा विलेख से साबित नहीं किया है। प्रतिवादियों ने मेसर्स के निदेशक मंडल द्वारा पारित प्रस्तावों, यदि कोई हों, को भी रिकॉर्ड में नहीं रखा है। होटल खोश महल लिमिटेड। कंपनी की वर्तमान स्थिति अस्पष्ट और अज्ञात है। इससे प्रतिवादियों के बचाव में खामियों का पता चलेगा, हालांकि, जैसा कि नीचे स्पष्ट किया गया है, वादी प्रतिवादियों के मामले की कमजोरी के आधार पर वर्तमान मुकदमे में सफल नहीं हो सकता है। हम पहले वाद, फिर अभिलेख पर साक्ष्य, जिसे आंशिक रूप से ऊपर देखा गया है, और प्रमाण के बोझ पर कानूनी स्थिति का उल्लेख करेंगे।

28. वादी ने एक विरोधाभासी रुख अपनाया था। वादमे ई निवेदन कयल गेल अछि जे मेसर्स। होटल खोश महल लिमिटेड की स्थापना की गई थी

भूमि लेने और अनुसूची 'ए' का निर्माण करने के बाद प्रबंधन महारानी चंद्रतारा देवी से पट्टे पर संपत्ति, वस्तुतः उस मेसर्स को स्वीकार करते हुए। होटल खोश महल लिमिटेड के कब्जे में था। उसी समय, वादी ने निवेदन किया था कि एम/एस। होटल खोश महल लिमिटेड

इसकी स्थापना 1941 में हुई थी और 1951 में चंद्रतारा देवी ने इसका अधिग्रहण कर लिया था।

इससे पहले, लेकिन 1968 में किराए का भुगतान बंद होने के बाद, महारानी चंद्रतारा देवी ने 29.10.1969 पर बिदुरकार्ता के पक्ष में एक पावर ऑफ अटॉर्नी का निष्पादन किया था।

23] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

पट्टा विलेख (प्रदर्शनी-12) के माध्यम से महाराजा दुर्जय किशोर देवबर्मा से अनुसूची 'ए' संपत्ति में पट्टा अधिकार। वादी द्वारा अभिवचन इस तथ्य की स्वीकृति है कि जब मेसर्स। होटल खोश महल लिमिटेड की स्थापना 1941 में की गई थी, और बाद में अनुसूची 'ए' संपत्ति।

इसके साथ निहित हो गया। 1941 में, वादी स्पष्ट रूप से अनुसूची 'ए' संपत्ति/खोश महल का मालिक या कब्जे में नहीं था। जमीन पर होटल भवन का निर्माण, यह स्पष्ट है, मेसर्स द्वारा किया गया था। होटल खोश महल लिमिटेड। वादी ने ऐसा कोई दावा नहीं किया है।

29. शिकायत के अनुसार, अनुसूची 'ए' संपत्ति महारानी चंद्रतारा देवी द्वारा मेसर्स को पट्टे पर दी गई थी। होटल खोश महल लिमिटेड। हालाँकि, वादी ने इस दावे के समर्थन में कोई दस्तावेज रिकॉर्ड पर नहीं रखा है कि महारानी चंद्रतारा देवी ने मेसर्स को पट्टे पर अनुसूची 'ए' संपत्ति दी थी। होटल खोश महल लिमिटेड। समान रूप से, प्रतिवादी संख्या। 1 7 तक स्थापित करने और यह दिखाने में सक्षम नहीं हैं कि एम/एस। होटल खोश महल लिमिटेड ने यह संपत्ति महारानी को पट्टे पर दी थी।

चंद्रतारा देवी। जो भी हो, हम उसके अनुरोध को स्वीकार करेंगे।

वादी कि एम/एस। होटल खोश महल लिमिटेड अनुसूची 'ए' संपत्ति के कब्जे में था, हालांकि प्रकृति और कब्जे का अधिकार विवादित है। इसके अलावा, शिकायत स्वीकार करती है कि 1968 के बाद एम/एस। इंडियन एयरलाइंस निगम लिमिटेड ने प्रतिवादी नं. 2 - एम/एस तक प्रभा रंजन देवबर्मा। इंडियन एयरलाइंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने 30.06.1986 पर संपत्ति खाली कर दी थी। वादी का दावा है कि उसके बाद उसने अपने कर्मचारियों और एजेंटों के माध्यम से अनुसूची 'ए' संपत्ति पर कब्जा कर लिया था और 'मेसर्स' के नाम और शैली में एक अतिथि गृह शुरू किया था। 'स्टार गेस्ट हाउस' अप्रमाणित या अविश्वसनीय है। न केवल दावे का समर्थन करने के लिए कोई दस्तावेज या सबूत नहीं है, बल्कि कब्जा आम तौर पर उस मकान मालिक को दिया जाता है जिसे किराया दिया जा रहा है। ऊपर दर्ज किए गए निष्कर्ष प्रतिवादियों के मामले का समर्थन करते हैं। इसके अलावा, यह स्पष्ट है कि प्रतिवादी नं. 8 पंजीकृत बिक्री विलेख (प्रदर्शनी-ई) दिनांक 17.07.1985 के अनुसार, अनुसूची 'ए' संपत्ति के एक हिस्से के वास्तविक भौतिक कब्जे में आ गया था। बिक्री विलेख मेसर्स की ओर से निष्पादित किया गया था। होटल खोश महल लिमिटेड। इसी तरह, प्रतिवादी संख्या। 9 11 ने कहा है कि उन्होंने मेसर्स द्वारा उनके पक्ष में निष्पादित खरीद/बिक्री विलेखों के आधार पर अनुसूची 'ए' भूमि के कुछ हिस्से खरीदे हैं। होटल खोश महल लिमिटेड। इस तथ्यात्मक पृष्ठभूमि में, हम दावे को स्वीकार करेंगे।

प्रतिवादियों का कहना है कि मुकदमा दायर करने की तारीख को वादी अनुसूची 'ए' संपत्ति के रचनात्मक या वास्तविक भौतिक कब्जे में नहीं था।

30. उपरोक्त तथ्यात्मक पृष्ठभूमि में, वादी को सफल होने के लिए, उसे यह स्थापित करना होगा कि उसके पास अनुसूची 'ए' संपत्ति, स्मृति देवबर्मा (मृत) श्रू लीगल रिप्रेजेंटेटिव V का कानूनी अधिकार है।

प्रभा रंजन देवबर्मा [संजीव खन्ना, जे.]

और परिणामस्वरूप, अधिकार की डिक्री का हकदार है। प्रतिवादियों को तब तक बेदखल नहीं किया जा सकता जब तक कि वादी ने एक बेहतर शीर्षक स्थापित नहीं किया हो। और अनुसूची 'ए' संपत्ति पर अधिकार। स्वामी के रूप में कल्पित चरित्र में भूमि का कब्जा रखने वाला व्यक्ति, और शांतिपूर्ण तरीके से

स्वामित्व के सामान्य अधिकार, सही मालिक को छोड़कर पूरी दुनिया के खिलाफ कानूनी अधिकार रखते हैं। वादी के पक्ष में अधिकार की डिक्री इस आधार पर पारित नहीं की जा सकती है कि प्रतिवादी संख्या। 1 12 तक अनुसूची 'ए' संपत्ति में अपने अधिकार, स्वामित्व और हित को पूरी तरह से स्थापित करने में सक्षम नहीं हैं। प्रतिवादी, कब्जे में होने के कारण, इसके हकदार होंगे उनके कब्जे की रक्षा करें और बचाएं, जब तक कि जो व्यक्ति उन्हें बेदखल करना चाहता है, उसे स्वामित्व या कब्जे के अधिकार के रूप में बेहतर कानूनी अधिकार न हो।

31. वर्तमान मामले में एक शीर्षक स्थापित करने के लिए प्रमाण 1 0 का भार

वादी पर निर्भर करता है क्योंकि यह भार उस पक्ष पर पड़ता है जो किसी विशेष स्थिति के अस्तित्व का दावा करता है जिसके आधार पर वह राहत का दावा करती है। यह साक्ष्य अधिनियम की धारा 101 1 2 के संदर्भ में अनिवार्य है, जिसमें कहा गया है कि तथ्य को साबित करने का बोझ उस पक्ष पर है जो

काफी हद तक सकारात्मक रूप से दावा करता है न कि उस पार्टी पर जो है

इसे अस्वीकार करें। यह नियम सार्वभौमिक नहीं हो सकता है और इसमें अपवाद हैं, लेकिन वर्तमान मामले की तथ्यात्मक पृष्ठभूमि में, सामान्य सिद्धांत लागू होता है। साक्ष्य अधिनियम की धारा 102 1 4 के संदर्भ में, यदि दोनों पक्ष साक्ष्य प्रस्तुत करने में विफल रहते हैं, तो मुकदमा विफल होना चाहिए। 1 5 सबूत की जिम्मेदारी, इसमें कोई संदेह नहीं है कि बदलती है और साक्ष्य के मूल्यांकन में स्थानांतरण एक निरंतर प्रक्रिया है,

9 पूना राम बनाम देखें। कानूनी प्रतिनिधियों और अन्य के माध्यम से मोती राम (मृत) (2019) 11 एस. सी. सी. 309 और नायर सर्विस सोसाइटी लिमिटेड बनाम। रेव. फादर के. सी. अलेक्जेंडर और अन्य, ए. आई. आर. 1968, एस. सी. 1165।

1 0 अनिल ऋषि बनाम में अनुच्छेद 19 देखें। गुरबख्श सिंह, (2006) 5 एस. सी. सी. 558 जहाँ

अभिव्यक्ति-'प्रमाण का भार' का उपयोग तीन तरीकों से किया जाता है, अर्थात्, (i) शुरुआत में या बाद में किसी प्रस्ताव के समर्थन में साक्ष्य लाने के कर्तव्य को इंगित करने के लिए; (ii) सभी प्रति-साक्ष्य के खिलाफ एक प्रस्ताव स्थापित करने के लिए; और (iii) एक अंधाधुंध उपयोग जिसमें इसका अर्थ या तो हो सकता है, या दोनों अन्य।

" अडुगाडा राघवम्मा और अनदर वी देखें। अडुगाडा चैनचम्मा और एक अन्य, ए. आई. आर. 1964 एस. सी. 136।

12 धारा 101: सबूत का बोझ। - जो कोई भी चाहता है कि कोई भी न्यायालय उन तथ्यों के अस्तित्व पर निर्भर किसी भी कानूनी अधिकार या दायित्व के बारे में निर्णय दे जो वह दावा करता है, उसे यह साबित करना होगा कि वे तथ्य मौजूद हैं। जब कोई व्यक्ति किसी भी तथ्य के अस्तित्व को साबित करने के लिए बाध्य

होता है, तो कहा जाता है कि सबूत का भार उस व्यक्ति पर होता है। 13 13 साक्ष्य अधिनियम की धारा 103,104 और 105 देखें। 1 4 धारा 102: सबूत का भार किस पर है। - मुकदमे या कार्यवाही में सबूत का भार उस व्यक्ति पर होता है जो विफल हो जाता है यदि दोनों तरफ से कोई सबूत नहीं दिया जाता है।

15 अनिल ऋषि बनाम देखें। गुरबख्श सिंह, (2006) 5 एस. सी. सी. 558।

23] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

लेकिन ऐसा तब होता है जब स्वामित्व और अधिकार के लिए एक मुकदमे में, वादी प्रतिवादी पर जिम्मेदारी स्थानांतरित करने की उच्च स्तर की संभावना पैदा करने में सक्षम होता है। इस तरह के साक्ष्य के अभाव में, सबूत का भार वादी पर होता है और उसे केवल तभी रिहा किया जा सकता है जब वह अपना हक साबित करने में सक्षम हो। 16 बचाव की कमजोरी आदेश देने का औचित्य नहीं हो सकती है

सूट। 17 1 7 वादी अनुसूची 'क' संपत्ति के संबंध में सफल हो सकती थी यदि उसने अनुसूची 'क' संपत्ति का स्वामित्व साबित करने के लिए बोझ का निर्वहन किया था जो पूरी तरह से उस पर पड़ता है। यह होगा वास्तविक प्रभाव साक्ष्य अधिनियम की धारा 101 और 102। 18 1 8 इसलिए, यह इस प्रकार है कि वादी को साक्ष्य अधिनियम के प्रावधानों के तहत बोझ को संतुष्ट और निर्वहन करना चाहिए था, जिसमें विफल रहने पर मुकदमा खारिज होने के लिए उत्तरदायी होगा। इस प्रकार, उच्च न्यायालय के विवादित फैसले ने अपील को उचित रूप से स्वीकार कर लिया था और निचली अदालत के फैसले और डिक्री को रद्द कर दिया था। इसलिए हम उच्च न्यायालय के निष्कर्षों को बरकरार रखते हैं कि मुकदमे को खारिज कर दिया जाना चाहिए। हम स्पष्ट करते हैं कि हमने त्रिपुरा भूमि राजस्व और भूमि सुधार अधिनियम, या प्रतिवादियों के दावे आदि में उच्च न्यायालय की किसी भी टिप्पणी में हस्तक्षेप या उसे दरकिनार नहीं किया है। विशेष रूप से, एम/एस। होटल खोश महल लिमिटेड वर्तमान कार्यवाही में पक्षकार नहीं है।

32. उपरोक्त चर्चा और कानूनी स्थिति को देखते हुए, वर्तमान अपील को खारिज किया जाना चाहिए। हम उसी के अनुसार आदेश देते हैं। मामले के तथ्यों में, लागत के बारे में कोई आदेश नहीं होगा।

या

चिका खारिज कर दी गई।

बिभूति भूषण बोस (सहायक: प्रीतम भारती, एलसीआरए)

1 6 आर. वी. ई. वेंकटचाला गौंडर बनाम देखें। अरुल्लिगु विश्वेसरस्वामी और वी. पी. मंदिर और दूसरा, (2003) 8 एस. सी. सी. 752।

17 भारत संघ और अन्य बनाम देखें। वासवी कोऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी लिमिटेड और अन्य, (2014) 2 एस. सी. सी. 269।

18 सेबेस्टियाओ लुइस फर्नांडीस (मृत) को एल. आर. के माध्यम से देखें। और अन्य वी। के. वी. पी. शास्त्री (मृत) एल. आर. के माध्यम से। और अन्य, (2013) 15 एससीसी 161।